

समकालीन पश्चिम एशिया संकट और भारत: सामरिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण का विश्लेषण

योगेश दूबे¹, प्रो. रजनी कान्त पाण्डेय²

¹शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
²विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश

पश्चिम एशिया में फरवरी 2026 के अंत में प्रारंभ हुए अमेरिका-इजरायल और ईरान संघर्ष ने क्षेत्रीय सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री व्यापार और वैश्विक आर्थिक स्थिरता के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। भारत के लिए यह संकट विशेष महत्व रखता है, क्योंकि पश्चिम एशिया भारत की ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, प्रवासी भारतीय समुदाय, समुद्री संपर्कता और रणनीतिक साझेदारियों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। यह शोध-पत्र समकालीन पश्चिम एशिया संकट के संदर्भ में भारत की सामरिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण की नीति का विश्लेषण करता है। अध्ययन गुणात्मक नीति-विश्लेषण पर आधारित है तथा सरकारी वक्तव्यों, शोध संस्थानों और समाचार पत्रों में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करता है। अध्ययन का तर्क है कि भारत की वर्तमान पश्चिम एशिया नीति पारंपरिक गुटनिरपेक्षता का विस्तार नहीं, बल्कि राष्ट्रीय हितों पर आधारित बहु-संरेखण का व्यावहारिक रूप है। भारत एक ओर अमेरिका और इजरायल के साथ रक्षा, प्रौद्योगिकी तथा रणनीतिक सहयोग को आगे बढ़ा रहा है, वहीं दूसरी ओर ईरान, और खाड़ी देशों के साथ ऊर्जा, व्यापार और संपर्कता संबंधों को बनाए रखा है। संकट ने इस नीति की उपयोगिता को प्रदर्शित किया है, लेकिन साथ ही ऊर्जा आयात, समुद्री मार्गों और क्षेत्रीय अस्थिरता पर भारत की निर्भरता की सीमाओं को भी प्रगट किया है।

बीज शब्द: पश्चिम एशिया, सामरिक स्वायत्तता, बहु-संरेखण, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा।

प्रस्तावना

पश्चिम एशिया भारत की विदेश नीति का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ आर्थिक, सामरिक, ऊर्जा, प्रवासन और समुद्री हित परस्पर गहराई से जुड़े हुए हैं। शीतयुद्ध के दौरान भारत की पश्चिम एशिया नीति औपनिवेशिक-विरोध, फिलिस्तीन के समर्थन, अरब राष्ट्रवाद और गुटनिरपेक्षता से प्रभावित थी। किंतु 1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण और ऊर्जा की बढ़ती आवश्यकता ने इस नीति को अधिक व्यावहारिक और हित-केंद्रित बनाया। इक्कीसवीं सदी में पश्चिम एशिया भारत के लिए केवल ऊर्जा स्रोत नहीं रहा, बल्कि निवेश, प्रौद्योगिकी, रक्षा, समुद्री सुरक्षा और संपर्कता का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। विशेष रूप से पिछले दशक में भारत ने पश्चिम एशिया के विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ समानांतर संबंध विकसित किए हैं। इस प्रक्रिया ने भारत की पश्चिम एशिया नीति को बहुस्तरीय और बहु-संरेखित स्वरूप प्रदान किया है (Wadhawan, 2019; Trigunayat, 2024)। 2026 का पश्चिम एशिया संकट इस नीति की वास्तविक परीक्षा

प्रस्तुत करता है। अमेरिका और इजरायल तथा ईरान के बीच सैन्य संघर्ष ने भारत के लिए केवल कूटनीतिक संकट नहीं प्रस्तुत किया, बल्कि इस संकट से ऊर्जा आपूर्ति, भारतीय नागरिकों की सुरक्षा, प्रेषण, समुद्री व्यापार और घरेलू महँगाई सभी इससे प्रभावित हुए। भारत ने संकट के दौरान संयम, तनाव-नियंत्रण, संवाद, नागरिक सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों की रक्षा पर बल दिया (Ministry of External Affairs, 2026; Prime Minister's Office, 2026)। इस संदर्भ में प्रमुख प्रश्न यह है कि क्या भारत की वर्तमान नीति वास्तविक सामरिक स्वायत्तता को प्रदर्शित करती है या अमेरिका-इजरायल के साथ बढ़ती निकटता के कारण उसकी रणनीतिक स्वतंत्रता सीमित हो रही है। इस अध्ययन का तर्क है कि भारत की नीति में दोनों प्रवृत्तियाँ एक साथ मौजूद हैं। भारत किसी एक शक्ति-गुट के साथ औपचारिक रूप से नहीं जुड़ा है, बल्कि विभिन्न मुद्दों पर अलग-अलग साझेदारियों का उपयोग करते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने का प्रयास कर रहा है। यही समकालीन बहु-संरेखण और सामरिक स्वायत्तता के बीच संबंध को स्पष्ट करता है। अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं: प्रथम, पश्चिम एशिया संकट के भारत की ऊर्जा, आर्थिक और समुद्री सुरक्षा पर प्रभाव का विश्लेषण करना; द्वितीय, संकट के दौरान भारत की कूटनीतिक प्रतिक्रिया के माध्यम से सामरिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण की प्रकृति को समझना; तथा तृतीय, संकट से उत्पन्न दीर्घकालिक नीति-निहितार्थों का आकलन करना।

सामरिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण का वैचारिक आधार

भारतीय विदेश नीति में सामरिक स्वायत्तता का मूल अर्थ यह है कि भारत अपने राष्ट्रीय हितों से संबंधित प्रश्नों पर किसी एक शक्ति या गठबंधन की प्राथमिकताओं के अधीन होकर निर्णय न ले। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि गुटनिरपेक्षता में दिखाई देती है, किंतु वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में इसका स्वरूप अधिक व्यावहारिक और हित-आधारित हो गया है। बहु-संरेखण सामरिक स्वायत्तता का परिचालन पक्ष है। इसका अर्थ है कि भारत एक ही समय में अमेरिका, रूस, इजराइल, ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात तथा अन्य शक्तियों के साथ अलग-अलग क्षेत्रों में सहयोग कर सकता है। इस प्रक्रिया में भारत किसी एक संबंध को अपनी संपूर्ण विदेश नीति का निर्धारक नहीं बनने देता। इस दृष्टि से बहु-संरेखण का अर्थ सभी पक्षों से समान दूरी बनाए रखना नहीं, बल्कि विभिन्न साझेदारों के साथ राष्ट्रीय हितों के अनुरूप अलग-अलग स्तरों पर सहयोग करना है। भारत की पश्चिम एशिया नीति में यह प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। रक्षा और प्रौद्योगिकी के लिए अमेरिका तथा इजराइल, ऊर्जा और निवेश के लिए खाड़ी देश तथा संपर्कता के लिए ईरान और मध्य एशिया से जुड़े विकल्प भारत की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इस प्रकार भारत की विदेश नीति में साझेदारियों का विस्तार स्वयं सामरिक स्वायत्तता का आधार बन जाता है (Pant, 2026)।

पश्चिम एशिया संकट और भारत की ऊर्जा सुरक्षा

पश्चिम एशिया संकट का भारत पर सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में दिखाई देता है। भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 90 प्रतिशत आयात करता है, जबकि उसकी एलपीजी आवश्यकता का 60 प्रतिशत से अधिक हिस्सा आयात से पूरा होता है। जिसका बड़ा हिस्सा पश्चिम एशिया से आता है, जिससे क्षेत्रीय अस्थिरता के प्रति भारत की ऊर्जा संवेदनशीलता और बढ़ जाती है। इसलिए पश्चिम एशिया में दीर्घकालिक अस्थिरता भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है (Bala Bhaskar, 2026)। होर्मुज जलडमरूमध्य इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। इसके माध्यम से होने वाली ऊर्जा

आवाजाही में व्यवधान से केवल तेल की कीमतों पर प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि जहाजरानी, बीमा, परिवहन, उर्वरक और आयात लागत भी प्रभावित होती है। परिणामस्वरूप ऊर्जा संकट घरेलू मुद्रास्फीति और आर्थिक वृद्धि पर दबाव डाल सकता है (Suri & Jain, 2026)। भारत ने संकट के दौरान ऊर्जा स्रोतों में विविधता बढ़ाने की दिशा में प्रयास किए। सितंबर 2026 तक कच्चे तेल के आपूर्तिकर्ता देशों की संख्या 27 से बढ़कर 41 तक पहुँचने की सूचना इस रणनीति को दर्शाती है (Gandhi, 2026; ThePrint/PTI, 2026)। रूस, अमेरिका, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका सहित विभिन्न स्रोतों से आयात बढ़ाने का प्रयास भारत की ऊर्जा कूटनीति को अधिक लचीला बना रहा है। फिर भी स्रोत-विविधीकरण को पूर्ण ऊर्जा सुरक्षा नहीं माना जा सकता। वैश्विक तेल बाजार की कीमतें, समुद्री परिवहन, बीमा लागत और पश्चिम एशिया की राजनीतिक स्थिरता अभी भी भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती हैं। इसलिए दीर्घकाल में ऊर्जा स्रोतों के साथ-साथ रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार, नवीकरणीय ऊर्जा और वैकल्पिक परिवहन मार्गों का विस्तार आवश्यक है।

प्रवासी भारतीय

पश्चिम एशिया में भारतीय प्रवासी समुदाय भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक आधार है। खाड़ी देशों में लगभग एक करोड़ भारतीयों की उपस्थिति भारत के लिए इस क्षेत्र के महत्व को स्पष्ट करती है (Prime Minister's Office, 2026)। इन प्रवासियों द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भारत के विदेशी मुद्रा प्रवाह और लाखों भारतीय परिवारों की आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। क्षेत्रीय संघर्ष के विस्तार से रोजगार, आवाजाही, आवास और व्यक्तिगत सुरक्षा से जुड़े जोखिम बढ़े हैं, जिससे पश्चिम एशिया में रह रहे भारतीय प्रवासियों की सुरक्षा तथा भारत को प्राप्त होने वाले लगभग 50 अरब अमेरिकी डॉलर के संभावित प्रेषण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है (Al Jazeera, 2026)। इसलिए प्रवासी सुरक्षा भारत की पश्चिम एशिया नीति का स्वतंत्र रणनीतिक आयाम बन गई है। नागरिक निकासी, दूतावासों के बीच समन्वय, संकट-संचार और वैकल्पिक परिवहन मार्गों की उपलब्धता को विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा के व्यापक ढाँचे से जोड़ना आवश्यक है। सामरिक स्वायत्तता केवल राज्यों के बीच शक्ति-संतुलन का प्रश्न नहीं है; इसमें विदेशों में रहने वाले भारतीय नागरिकों की सुरक्षा भी शामिल है।

भारत, ईरान और अमेरिका-इजरायल संबंधों का संतुलन

भारत-ईरान संबंध ऊर्जा, संपर्कता और क्षेत्रीय भू-राजनीति के कारण महत्वपूर्ण हैं। चाबहार बंदरगाह भारत को ईरान के माध्यम से अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक वैकल्पिक संपर्क उपलब्ध कराता है। अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे के संदर्भ में भी ईरान भारत की संपर्कता रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके समानांतर अमेरिका और इजरायल भारत के रक्षा, प्रौद्योगिकी, खुफिया सहयोग और उच्च-प्रौद्योगिकी क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण साझेदार हैं। इसलिए भारत के लिए ईरान के साथ संबंध बनाए रखना तथा अमेरिका-इजरायल के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित करना परस्पर विरोधी नहीं है, बशर्ते भारत अपनी निर्णय-स्वतंत्रता बनाए रखे। 2026 के संकट ने इस संतुलन को अधिक कठिन बना दिया। भारत को एक ओर अमेरिका और इजरायल के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को ध्यान में रखना था, तो दूसरी ओर ईरान और खाड़ी देशों के साथ आर्थिक तथा क्षेत्रीय हितों की रक्षा करनी थी। इस परिस्थिति में भारत ने सैन्य पक्ष लेने के बजाय संवाद, संयम और कूटनीति पर बल दिया (Sonavane, 2026; Pant, 2026)। इसे "हित-आधारित चयनात्मक संरेखण" कहा जा सकता है। भारत प्रत्येक साझेदार के साथ

संबंधों को एक व्यापक गठबंधन में परिवर्तित किए बिना विशिष्ट क्षेत्रों में सहयोग करता है। यही बहु-संरक्षण की केंद्रीय विशेषता है।

समुद्री सुरक्षा और संपर्कता

भारत की पश्चिम एशिया नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम समुद्री सुरक्षा है। होर्मुज जलडमरूमध्य, अरब सागर, लाल सागर और बाब-अल-मन्देब भारत के ऊर्जा आयात तथा वैश्विक व्यापार के लिए महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग हैं। इनमें किसी भी प्रकार का दीर्घकालिक व्यवधान भारतीय व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा को प्रभावित कर सकता है। 2026 के संकट ने स्पष्ट किया कि समुद्री सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। समुद्री परिवहन की लागत, बीमा प्रीमियम, जहाजों की उपलब्धता और वैकल्पिक मार्गों की आवश्यकता सीधे ऊर्जा कीमतों तथा व्यापार लागत को प्रभावित करती है (Suri & Jain, 2026)। इसी संदर्भ में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा दीर्घकालिक रणनीतिक महत्व प्राप्त करता है। 2023 में घोषित इस पहल का उद्देश्य भारत, खाड़ी क्षेत्र और यूरोप के बीच परिवहन, डिजिटल और संभावित ऊर्जा संपर्क को बढ़ाना है (Suri et al., 2024)। किंतु वर्तमान संकट यह भी दर्शाता है कि क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाएँ स्वयं क्षेत्रीय अस्थिरता से प्रभावित हो सकती हैं। इसलिए IMEC, चाबहार और अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे को प्रतिस्पर्धी परियोजनाओं के बजाय पूरक संपर्क विकल्पों के रूप में विकसित करना भारत के लिए अधिक उपयोगी होगा। संपर्कता में विविधता भारत की सामरिक स्वायत्तता को आर्थिक आधार प्रदान कर सकती है।

संकट के घरेलू आर्थिक प्रभाव

पश्चिम एशिया संकट का प्रभाव भारत के घरेलू आर्थिक क्षेत्र तक भी पहुँचा है। ऊर्जा कीमतों में वृद्धि परिवहन, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों की लागत बढ़ा सकती है। इसी प्रकार उर्वरक और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति में व्यवधान कृषि क्षेत्र पर दबाव डाल सकता है। बढ़ती लागत से किसानों, छोटे व्यवसायों और निम्न तथा मध्यम आय वर्ग पर अतिरिक्त बोझ पड़ सकता है (Jain, 2026)। इस प्रकार पश्चिम एशिया संकट को केवल विदेश नीति अथवा क्षेत्रीय सुरक्षा की समस्या के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह भारत की व्यापक आर्थिक सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। यदि ऊर्जा और समुद्री आपूर्ति शृंखलाओं में लंबे समय तक व्यवधान बना रहता है, तो इसका प्रभाव मुद्रास्फीति, राजकोषीय प्रबंधन, व्यापार संतुलन और आर्थिक वृद्धि पर पड़ सकता है। यह स्थिति सामरिक स्वायत्तता की संरचनात्मक सीमा को भी स्पष्ट करती है। विदेश नीति में निर्णय लेने की स्वतंत्रता तभी प्रभावी होती है जब देश के पास संकट के समय पर्याप्त आर्थिक और ऊर्जा विकल्प उपलब्ध हों। अतः ऊर्जा विविधीकरण, घरेलू ऊर्जा क्षमता और आपूर्ति शृंखलाओं की मजबूती सामरिक स्वायत्तता के आवश्यक आधार हैं।

विवेचना

2026 के संकट के दौरान भारत की सामरिक स्वायत्तता को लेकर दो प्रमुख दृष्टिकोण सामने आए। एक दृष्टिकोण के अनुसार अमेरिका-इजरायल के साथ बढ़ती निकटता भारत की पारंपरिक संतुलनकारी नीति को सीमित कर सकती है। दूसरा दृष्टिकोण मानता है कि अमेरिका के साथ गहरे संबंध और साथ ही ईरान तथा खाड़ी देशों के साथ संबंध बनाए रखना स्वयं बहु-संरक्षण और सामरिक स्वायत्तता का प्रमाण है। भारत की वास्तविक नीति का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि उसने किसी औपचारिक सैन्य गठबंधन

में प्रवेश नहीं किया और न ही ईरान, खाड़ी देशों अथवा इजरायल के साथ संबंधों को समाप्त किया। इसके बजाय उसने विभिन्न पक्षों से संवाद बनाए रखा तथा राष्ट्रीय हितों के अनुरूप अपने कूटनीतिक विकल्प खुले रखे (Pant, 2026; Pande, 2026)। फिर भी भारत के सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। अत्यधिक अस्पष्टता या केवल व्यावहारिक हितों पर आधारित कूटनीति दीर्घकाल में भारत की मानकात्मक विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकती है। अंतरराष्ट्रीय कानून, संप्रभुता, नागरिक सुरक्षा और शांतिपूर्ण विवाद-समाधान जैसे सिद्धांतों पर स्पष्टता भारत की वैश्विक भूमिका को अधिक विश्वसनीय बना सकती है (Mishra, 2026)। इसलिए सामरिक स्वायत्तता का अर्थ केवल सभी पक्षों से संबंध बनाए रखना नहीं होना चाहिए। इसका अर्थ यह भी है कि भारत संकट की परिस्थितियों में अपने राष्ट्रीय हितों और व्यापक अंतरराष्ट्रीय सिद्धांतों के बीच संतुलन स्थापित करने की क्षमता रखे।

नीतिगत-सुझाव

समकालीन पश्चिम एशिया संकट भारत की विदेश और सुरक्षा नीति के लिए कई दीर्घकालिक प्राथमिकताएँ प्रस्तुत करता है।

पहली, ऊर्जा स्रोतों और आपूर्ति मार्गों का और अधिक विविधीकरण आवश्यक है। रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार का विस्तार, नवीकरणीय ऊर्जा, प्राकृतिक गैस के वैकल्पिक स्रोत और घरेलू ऊर्जा क्षमता भारत की बाहरी निर्भरता को कम कर सकते हैं।

दूसरी, अमेरिका, इजरायल, ईरान और खाड़ी देशों के साथ संबंधों को शून्य-योग ढाँचे में नहीं देखा जाना चाहिए। भारत को मुद्रा-विशिष्ट और क्षेत्र-विशिष्ट सहयोग की नीति जारी रखनी चाहिए।

तीसरी, समुद्री सुरक्षा को ऊर्जा सुरक्षा के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है। अरब सागर, पश्चिमी हिंद महासागर, अदन की खाड़ी और प्रमुख समुद्री मार्गों की निगरानी तथा साझेदारी को मजबूत करना आवश्यक है।

चौथी, IMEC, चाबहार और अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे जैसे संपर्क विकल्पों को समानांतर रूप से विकसित किया जाना चाहिए। इससे भारत किसी एक मार्ग अथवा क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता से बच सकेगा।

पाँचवीं, प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा के लिए स्थायी संकट-प्रबंधन व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। निकासी क्षमता, संकट-संचार, दूतावास समन्वय और वैकल्पिक परिवहन तंत्र को संस्थागत रूप दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

समकालीन पश्चिम एशिया संकट भारत की विदेश नीति के लिए गंभीर चुनौती के साथ-साथ उसकी सामरिक परिपक्वता की परीक्षा भी है। संकट ने स्पष्ट किया है कि पश्चिम एशिया भारत के लिए केवल ऊर्जा और प्रवासी भारतीयों का क्षेत्र नहीं है। यह ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री संपर्कता, निवेश, रक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यापार और वैश्विक शक्ति-संतुलन से जुड़ा व्यापक रणनीतिक क्षेत्र है। भारत ने संकट के दौरान किसी औपचारिक सैन्य गठबंधन का हिस्सा बनने के बजाय संवाद, संयम, नागरिक सुरक्षा, ऊर्जा-विविधीकरण और विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ संपर्क बनाए रखने की नीति अपनाई। इस दृष्टि से बहु-संरेखण भारत की सामरिक स्वायत्तता का व्यावहारिक साधन है। अमेरिका और इजरायल के साथ रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए ईरान तथा खाड़ी देशों के साथ संबंध बनाए रखना इस नीति की बहुआयामी प्रकृति को दर्शाता है।

हालाँकि संकट ने सामरिक स्वायत्तता की संरचनात्मक सीमाओं को भी उजागर किया है। यदि भारत ऊर्जा आयात, समुद्री मार्गों और महत्वपूर्ण आपूर्ति शृंखलाओं में अत्यधिक बाहरी निर्भरता बनाए रखता है, तो उसकी कूटनीतिक स्वतंत्रता सीमित रह सकती है। इसलिए भविष्य की भारतीय रणनीति का लक्ष्य केवल शक्ति-संतुलन बनाए रखना नहीं, बल्कि ऐसे राष्ट्रीय विकल्पों का निर्माण करना होना चाहिए जो संकट के समय निर्णय लेने की स्वतंत्रता सुनिश्चित करें। इस प्रकार सामरिक स्वायत्तता को केवल कूटनीतिक स्वतंत्रता के सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि ऊर्जा विविधीकरण, समुद्री क्षमता, आर्थिक लचीलापन, संपर्कता, प्रवासी सुरक्षा और बहु-संरेखित कूटनीति के संयुक्त परिणाम के रूप में समझना आवश्यक है। भारत की वास्तविक शक्ति इस क्षमता में निहित है कि वह विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ सहयोग कर सके, लेकिन किसी एक शक्ति-केंद्र पर अपनी रणनीतिक निर्भरता को इतना न बढ़ने दे कि उसकी निर्णय-स्वतंत्रता प्रभावित हो। आने वाले वर्षों में यही संतुलन भारत की पश्चिम एशिया नीति और व्यापक वैश्विक भूमिका की प्रभावशीलता को निर्धारित करेगा।

संदर्भ

1. Al Jazeera. (2026, March 13). How Israel-US war on Iran puts \$50bn in Indian remittances at risk.
2. Bala Bhaskar, B. (2026, September 30). The West Asian conflict: India's energy and economic vulnerabilities. Outlook India.
3. Chellaney, B. (2026, August 7). The dawn of a new strategic era: India has begun to absorb the lessons from the Iran war. Open.
4. Gandhi, S. (2026, September 8). US-Iran war impact: India adds new suppliers amid crude supply disruption, but only 5 nations control imports. Mint.
5. India Today. (2026, October 4). India has a massive role to play: US defence expert on new world order.
6. Jain, S. (2026, May 29). West Asia crisis and cost to farmers, women and youth in India. Observer Research Foundation.
7. Jain, S. (2026, August 18). How long can the world & India absorb the US-Iran war oil shock? Times of India.
8. Ministry of External Affairs, Government of India. (2026, March 9). Suo motu statement by EAM Dr. S. Jaishankar in Rajya Sabha on "The situation in West Asia". Press Information Bureau.
9. Middle East Institute. (2021). India's relations with West Asia: What patterns and what future?
10. Mishra, A. (2026, March 27). The West Asian crisis could upend the international order. India should revise its approach. The India Forum.
11. Pande, A. (2026, May 5). India's West Asian dilemma. Hudson Institute/GIS Reports.
12. Pant, H. V. (2026, March 19). India's strategic balancing in the Middle East. Observer Research Foundation.
13. Pethiyagoda, K. (2025, June 26). Positioning India's interests in the Israel-US-Iran conflict. Observer Research Foundation.
14. Prime Minister's Office. (2026). PM addresses the Lok Sabha on the ongoing conflict in West Asia. Government of India.
15. Sonavane, A. (2026, April 2). India's diplomacy in the West Asia conflict. Takshashila Institution.
16. Suri, N., Ghosh, N., Taneja, K., Patil, S., & Mookherjee, P. (2024, April 9). India-Middle East-Europe Economic Corridor: Towards a new discourse in global connectivity. Observer Research Foundation.

17. Suri, S., & Jain, S. (Eds.). (2026, June 12). From Hormuz to households: The impacts of the Middle East crisis on the Indian economy. Observer Research Foundation, Special Report No. 310.
18. ThePrint/PTI. (2026, September 28). India so far successfully navigated crude oil supply disruptions due to West Asia crisis: Puri.
19. Trigunayat, A. (2024, April 30). Key changes in India's approach towards West Asia over the last ten years: From Link West to Act West. Vivekananda International Foundation.
20. Wadhawan, M. (2019, October 31). The evolution of India's West Asian policy. Observer Research Foundation.